1122
523
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1382/1971

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 523

1911

157

क्रान्ति पुष्पांजली अथवा

"स्वतंत्र-भारत" का झंडा सबसे पहले लहरानेवाले भारतीय
राष्ट्र-महासभा के साम्य-वादी सभापति

राष्ट्रपति पं० जवाहरलालजी नेहरू

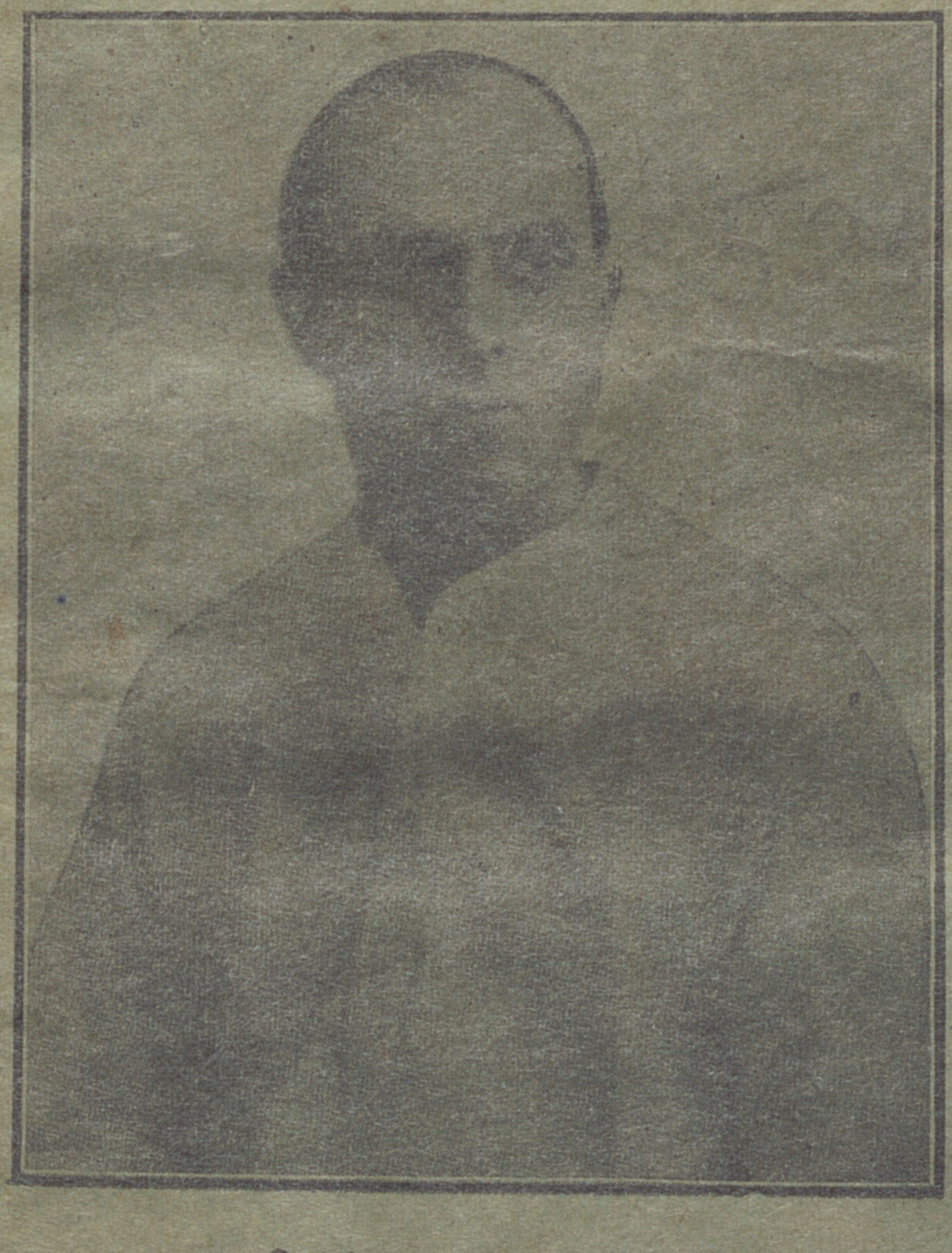

प्रकाशक—राष्ट्रीय पुस्तक भण्डार,
अनवरगंज, कानपुर।

सिर्फ टाइटिल चन्द्रा फ़ैन्सी प्रेस, कानपुर में मुद्रित।

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
30
DEPARTMENT

बन्देमातरम् ।

लंकाशायर का दिवाला

व

❀ नौकरशाही का मुँह काला ❀

संकलन कर्ता

॥ पं० बंशीधर शर्मा "बिमल" ॥

मुद्दत से गुलामी में हम सब फसे हुये थे।
आज़ाद अब बनेंगे, वो आगया ज़माना ॥
दहशत न कभी खाना, हरगिज न तुम डराना।
स्वराज्य के मिलने का, ज़रिया है जेलखाना ॥
ज़ालिम तेरी हुकूमत, दुनियां से है मिटाना।
हमको तो वतन अपना, आज़ाद है बनाना ॥
आज़ाद हमें करदे, आज़ाद रहा चाहें।
वर्ना नहीं मिलेगा, लन्दन में भी ठिकाना ॥
"विमल"

प्रकाशक—
राष्ट्रीय पुस्तक भन्डार अनवरगंज, कानपुर।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVT. OF INDIA
No. 523
Date 13.12.71

891.43
Sh23L

श्री राष्ट्रीय पुस्तक भण्डार की अपूर्व पुस्तकें।

राष्ट्रीय पुस्तक भण्डार की उत्तम २ पुस्तकें व मनोहर २ गाने निडर होकर राष्ट्र में प्रकाशित करने का साहस देख कर भला कौन प्रसन्न न होगा, आर्य्य हिंदू ललनायें और कन्यायें बड़े प्रेम से गाती हैं।

इस लिये हमने भारतवर्ष के कोने २ में प्रचार के विचार से छोटे २ ट्रैक्ट प्रकाशित किये है लोग सैकड़ों की संख्या में मंगाकर राष्ट्रीय पाठशालाओं में बाँटने तथा व्याह शादी आदि उत्सवों में वितरण करते हैं। प्रचारार्थ पुस्तकें ३=) में दी जाती हैं।

सामाजिक पुस्तकें		राष्ट्रीय पुस्तकें	
ईश्वर विनय	... -)	क्रांति का शंखनाद	-)॥
बारी संगीत रत्न चारो भाग	।)	आज़ादी का बिगुल	-)॥
सीता सती	... -)	आज़ाद भारत के गाने	-)॥
सोहाग रात के वादे	... -)	क्रांति की गूंज	-)॥
अनमोल बिवाह	... -)	लखनऊ की नादिरशाही	-)॥
बिधवा बिलाप	... -)	पेशावर का हत्याकांड	-)॥
राना संगीत रत्न	... -)	बम्बई का दमन	-)॥
वेश्या दोष दर्शन	... -)	कलकत्ता की धर पकड़	-)॥
नशा दोष दर्शन	... -)	दमन का दिवाला नौकरशाही	
जुवा दोष दर्शन	... -)	का मुंह काला	-)॥
अछूत पुकार	... -)	राष्ट्रीय बीणा की झनकार	-)॥
		जख़्मी भारत अथवादमनसभा	।)

प्रचारकों और एजेन्टों की हर जगह ज़रूरत है १५) रु० माल मगाने से पेकिंग खर्चा नहीं लिया जाता है माल चौथाई रुपया पाने से भेजा जाता है।

पता—हिंदू समाज सुधार सहादतगंज लखनऊ।

राष्ट्रीय झंडा गान १

——:o:——

विजई विश्व विश्व का प्यारा।
झंडा घर घर लगे हमारा॥
मन में मोद बढ़ाने वाला, शांति शक्ति दरसाने वाला।
अतिशय जोश दिलाने वाला, लगता बड़ा तिरंगा प्यारा॥
झंडा घर घर लगे हमारा।
विजई विश्व विश्व का प्यारा॥
स्वतंत्रता को दिखलायेगा, दुश्मन का दिल दहलायेगा।
पास न संकट भय लायेगा, कभी न भारत से हो न्यारा॥
झंडा घर घर लगे हमारा।
विजई विश्व विश्व का प्यारा॥
इस झंड़े के बल से भाई, निश्चय हो स्वराज्य सुखदाई।
मातृ भूमि को लो अपनाई, अर्पण कर तन मन धन सारा॥
झंडा घर घर लगे हमारा।
विजई विश्व विश्व का प्यारा॥
वीरो समर भूमि में आओ, अब तो खेल जान पर जाओ।
इस झंडे की सान बढ़ाओ, रिपुओं का दल जिससे हारा॥
झंडा घर घर लगे हमारा।
विजई विश्व विश्व का प्यारा।
जीवन बार बार नहि पाना, 'शर्मा' ध्यान सदा उर लाना।
इस भीषण रण में आ जाना, तभी लक्ष हो पूर्ण तुम्हारा॥
झंडा घर घर लगे हमारा।
विजई विश्व विश्व का प्यारा॥

पं० राधेश्याम शर्म्मा।

२ गजल

[श्री हरद्वारप्रसाद बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

जब तक स्वराज्य हिन्द में लाया न जायगा।
झंडा किसी तरह से हटाया न जायगा॥
हर रोज हो रही है तबाही जो हिन्द में।
मिट जांयगे, गर इसको घटाया न जायगा॥
पैदा करे जो अन्न, वही भूख से मरे।
यह जुल्म-सितम अब तो उठाया न जायगा॥
मिहनत करे कोई, कोई लूटे, करे मज़े।
धन अपना इस तरह से लुटाया न जायगा॥
क़ानून इस तरह कि तरक्क़ी न हम करें।
अंधेर इस तरह से मचाया न जायगा॥
कैसे ज़लील हो रहे, हम ग़ैर मुल्क में।
पशुओं की तरह ठोकरें खाया न जायगा॥
हम बावफ़ा हैं कैसे, दिखाया है, बार बार।
अब पेट के बल हमको चलाया न जायगा॥
वादे बहुत किये, न किया एक भी पूरा।
वादों पै इतबार अब, लाया न जायगा॥
जख़्मी जिगर को चैन हो सकता नहीं तब तक।
शैतानी हुकूमत को मिटाया न जायगा॥
खुशहाल न होगा, न तरक़्क़ी करेगा मुल्क!
जब तक स्वराज्य हिन्द में लाया न जायगा॥

राष्ट्रपति जवाहरलाल जेल में ३

गया जेल में है हमारा जवाहर।
वह मोती की आँखों का तारा जवाहर॥ टेक॥
गुलामी की ज़ंज़ीर को जिसने तोड़ा।

ब्रिटिस कूट-नीति के भंडे को फोड़ा ॥
अहिंसा का करमें लिया उसने कोड़ा।
पड़ा कूद संग्राम में मुँह न मोड़ा ॥
जो था मात भारत का प्यारा जवाहर। गया० १ ॥

गुलामी की ज़ंज़ीर में जो कसे थे।
गवमैंट के लोभ में जो ग्रसे थे ॥
युवक देश के भोग में जो फंसे थे।
निराशा के जो मन्दिरों में बसे थे ॥
उठा कर उन्हें यह उचारा जवाहर। गया० २ ॥

किया दूध का दूध, पानी का पानी।
पड़ी क़ैद में मात भारत भवानी ॥
हो आज़ाद भारत यही ठान ठानी।
न आगे पड़ें जिसमें सख़्ती उठानी ॥
यही दिल में अपने बिचारा जवाहर। गया० ३ ॥

हुआ मुल्क आज़ाद क्यों सो रहे हो।
बनाओ नमक, वक्त क्यों खो रहे हो ॥
अभीसेही हिम्मत को क्यों हर रहे हो।
बढ़ाओ क़दम देर क्यों कर रहे हो ॥
यही गांधी जी ने पुकारा जवाहर। गया० ४ ॥

जमींदार करते किसानों पै सख़्ती।
ब्रिटिस की थीं ख़ूनी कृपाएँ चमकती ॥
लिया शीघ्र ही कर में नीती की तख़्ती।
थी आज़ादी की दिलमें अग्नी धधकती ॥
किसानों का नूरे नज़ारा जवाहर। गया० ५ ॥

महात्मा गांधी की कैद पर (बहरे तवील) ४

जेल गांधी गये हैं हमारे लिये,
फिक्र हमको भी उन के छुड़ाने की हो।

दिल में सच्ची लगन देश की हो लगी,
क्या वो उल्फ़त फ़क़त जो दिखाने की हो ॥
जिसमें बरसा हो हुन खान रत्नों की हो,
और सरताज सारे जमाने की हो।
हाय किसमत ! वही भूमि भूखों मरे,
और क़िल्लत वही दाने-दाने की हो ॥
चर्ख़ फिरता है तो उसको फिरने भी दो,
फ़िक्र तुम को तो चर्ख़ा चलाने की हो।
दूर करदो मुलक से विदेशी वसन,
फ़िक्र खादी स्वदेशी बनाने की हो ॥
अब मिटा दो नशेबाजो का सब ब्यसन,
पूरी कोशिश पिकेटिंग कराने की हो ॥
काम कुछ तो करो देश के वास्ते,
कोई सूरत तो फिर मुँह दिखाने की हो।
सोये नींदे क़यामत की जागे हो कुछ,
फ़िक्र औरों को भी अब जगाने की हो ॥
हो ख़बरदार बेहोश होना न फिर,
लाख तदवीर तुमको सुलाने की हो।
पेट के बल चले, गोलियों से मरे,
याद नंगे बदन कोड़े खाने की हो ॥
नाम भारत का यारो डुबाओ नहीं,
कुछ तो ग़ैरत नदामत उठाने की हो ॥
हमको "अख़्तर" किसी से अदावत नहीं,
चाहते हैं मुहब्बत ज़माने की हो।
पर गुलामी किसी की गवारा नहीं,
क्यों न तदबीर आज़ादी पाने की हो ॥

—स्वामी नारायणानन्द "अख़्तर"

बिगुल बज गया सुनो हुशियार ५

बिगुल बज गया सुनो हुशियार, जवानो हो जाओ तैयार।
छिड़ा है आज़ादी का जङ्ग उठो फिर लेकर नई उमङ्ग॥
चलो मिल कोटि कोटि एक संग, देखकर दुश्मन होवें दंग।
तुम्हीं को ताक रहा संसार॥ जवानो०॥
समर का सारा साज सँभाल चलो, अब ऐ! माईके लाल।
निडर हो मरकर लो जयमाल, न नीचा हो भारत का भाल॥
मची है चारों ओर पुकार॥ जवानो०॥
डरो मत मन में रक्खो धीर, रहेगा अमर न सदा शरीर।
गुलामी की तोड़ो ज़ंजीर, अरे टुक देखो मां की पीर॥
किस लिये चुप बैठे मन मार॥ जवानो०॥
समर फिर आया वर्षों बाद, क्रान्ति का सुनलो सिंहनिनाद।
जिओ जगमें होकर आज़ाद, या कि फिर हो जाओ बरबाद॥
मिटा दो अन्यायी सरकार॥ जवानो०॥
देश के कुछ तो आओ काम, चलो भर्ती हो तज धन धाम।
लजाओ मत माता का नाम, है गान्धी का अंतिम संग्राम॥
न आयेगा यों बारम्बार॥ जवानो०॥
सुनो सेनापति का आह्वान, निकालो अब अपने अरमान।
मचाओ बढ़ बढ़ कर घमसान, चढ़ाओ बेदी पर बलिदान॥
खुला है तुम्हें स्वर्ग का द्वार॥ जवानो०॥

छैलबिहारी दीक्षित 'कंटक'।

गायन ६

जवानो उठो उठो तत्काल, न झुकने देना भारत भाल।
देश में इतनी है हलचल, पहनते फिर भी तुम मलमल॥

कहां इतना अमूल्य पलपल, कहां तुम खोद रहे दलदल।
पहिनना मत परदेशी माल ॥ न झुकने० ॥
चाहिये तुम्हें कार्य करना, दासता अन्धकार हरना।
जगत में पशुवत दिन भरना, है इससे तो अच्छा मरना ॥
काट दो पराधीनता जाल ॥ न झुकने० ॥
अगर लेना है आजादी, तो पहना करो शुद्ध खादी।
रुकेगी इससे बरबादी चाल अच्छी अपनी सादी ॥
अरे मत बनो हीन कंगाल ॥ न झुकने० ॥
हमारा शान्त सत्य संग्राम, न इसमें हिंसा का कुछ काम।
चाहते हो यदि अपना नाम, तोबसअब चलो न लो विश्राम ॥
खड़ा है सिर पर काल कराल ॥न झुकने०॥
गुलामी आजादी की तोल, बताओ किसको लोगे मोल ?
जरा देखो हृदय टटोल, न जाना अपने व्रतसे डोल ॥
बोलना अपने होश संभाल ॥न झुकने०॥
जहां पर चले तोप तलवार, वहाँ चुप सहते जाना वार।
न हटना पीछे हिम्मत हार, वहीं देना तन, मन, धन वार ॥
जीतकर लाना विजय विशाल ॥ न झुकने० ॥

अभिराम शर्म्मा।

प्रतिज्ञा ७

घर घर में क्रांति मचावेंगे।
भारत स्वाधीन बनावेंगे ॥

देखो, मां का आह्वान हुआ, आज़ादी का सामान हुआ।
वेदी पर यज्ञ विधान हुआ, फिर मुर्दा जोश जवान हुआ ॥
मचला है मन मिट जावेंगे।
भारत स्वाधीन बनावेंगे ॥ १ ॥

नवयुग के नवउद्गारों का, दुश्मन के प्रबल प्रहारों का।
जंजीरों कारागारों का, स्वागत है अत्याचारों का॥
जीवन का मोह जलावेंगे।
भारत स्वाधीन बनावेंगे॥२॥
गोदी के लाल लुटावेंगी, माताएं बलि बलि जावेंगी।
माथे पर शिकन न लावेंगी, पति को पत्नियां पठावेंगी॥
ज़ालिम सरकार मिटावेंगे।
भारत स्वाधीन बनावेंगे॥३॥
भाइयो और बहिनों आओ, माता का मान बचा जाओ।
प्राणों की आहुति ले धाओ, गांधी को हुक्म बजा लाओ॥
दूषित दासता भगावेंगे।
भारत स्वाधीन बनावेंगे॥४॥
वीरो! आओ सुख दुख झेलो, अब उठो आज खुलकर खेलो।
माता की अब आशिष लेलो, मौका है तन मन धन देलो॥
लंदन तक शीघ्र हिलावेंगे।
भारत स्वाधीन बनावेंगे॥५॥

"कंटक"

देशभक्त का प्रलाप ८

हमारा हक़ है, हमारी दौलत, किसी के बाबा का ज़र नहीं है।
है मुल्कभारत वतन हमारा, किसी के खाला का घर नहीं है॥
हमारी आत्मा अजर-अमर है, निसार तन-मन स्वदेश पर है।
है चीज़ क्या जेलो गन मशीनें, क़ज़ा का भी हमको डर नहीं है॥
न देश का जिसमें प्रेम होवे, दुखी के दुख से जो दिल न रोवे।
खुशामदी बनके शान खोवे, वो ख़र है, हरगिज़ बशर नहीं है॥
हक़ूक अपने ही चाहते हैं, न कुछ किसी का बिगाड़ते हैं।
तुझे तो ऐ खुदगरज़, किसी की भलाई मद्दे नज़र नहीं है॥

हमारी नस नस का खून तूने, बड़ी सफाई के साथ चूसा।
है कौन सी तेरी पालिस, वह कि जिसमें घोला ज़हर नहीं है॥
बहाया तूने है खूं उसी का, है तेरे रग रग में अन्न जिसका।
बता दे बेदर्द, तू ही हक़ से, सितम ये या क़हर नहीं है॥
जो बेगुनाहों को है सताता, कभी न वह सुख से बैठ पाता।
बड़े-बड़े मिट गये सितमगर, क्या इसको तुझको खबर नहीं है॥
सँभल-सँभल अब भी ओ लुटेरे, है तेरे पापों का अन्त आया।
कि जुल्म करने में तूने ज़ालिम ज़रा भी रक्खी कसर नहीं है॥
ग़ज़ब है हम बेकसों की आहें, ज़मीन औ आसमा हिला दें गे।
ग़लत है समझे 'कमल' जो समझे कि आह में कुछ असर नहीं है॥

स्वराज्य लेंगे ६

स्वराज्य लेने को अब अड़े हैं, तो स्वराज्य लेकर ही फिर हटें गे।
वतन जब तक आज़ाद होगा, ये युद्ध अहिंसा किया करें गे॥
जेलखाने से क्या डरें गे, वो पाक मन्दिर है कृष्ण जी का।
न जाके मथुरा व द्वारिका जी, ये जेल अपना भरा करें गे॥
वे जुल्म ढायें हज़ारों हम पर, न हम ये बिलकुल गिला करें गे।
व्रत अहिंसा का करें ग़े पालन, वो देश के हित मरा करें गे॥
खून रग २ में देश का है औ देश ही ने किया है पालन।
तो काम लो ये भी देश का है, ये देश का ऋण अदा करें गे॥
फंस कर माया में नौकरशाही, जब तक हमपर जबर करेगी।
ये डाल मस्तक चर्ण में उनके, नसीहत हरदम किया करें गे॥
जो ज़ालिम अपनी गन मसीनें, चलायें हम बेगुनाहोंके ऊपर।
तो बन्देमातरम् का मंत्र जपकर, वो वार सीने पै लिया करें गे॥
कातें गे चर्खा बिनें गे खद्दर, विदेशी वस्त्र न अब छुयें गे।
जब तक मकसद न होगा हासिल, तब तक विष्णु लिखा करें गे॥

गज़ल नं० १०

तुम्हें गर बाग़ जलियाँ हर तरफ बनाना आता है।
शहीद हमको भी अपने मुल्क पर हो जाना आता है॥
तुम्हारे पास बल है तोप और गोली तमंचे का।
हमें तो सिर्फ चरखाही चलाना एक आता है॥
तुम्हारे दिल में हैं अरमाँ मिटादें इनको दुनियाँ से।
हमें तो शौक से खुद सूली पे चढ़ जाना आता है॥
एक दो को करो क्यों कैद एक दम हुक्म ही देदो।
तुम्हें गर बेकसों पे जुल्महो का ढाना आता है॥
न घबड़ाओ करो कुछ सब्र देखो गौर कर गोरे।
तुम्हारे वास्ते गांधी लिये परवाना आता है॥
नहीं वह जेल है अब तो तपोभूमी है ऋषियों की।
जहां पर बंद होने देशका दीवाना आता है॥
जलाले जितना जी चाहे यह कहदो उस समा रू से।
नया हर रोज़ जलने के लिये परमाना आता है॥
हमें चश्मे रवाँ से जायका नमकीन मिलता है।
हमारे आसुओं को क्या नमक बन जाना आता है॥
अगर जामे सहादत का पियो जो कुञ्जबिहारी।
तो पीलो गांधी देखो लिये पैमाना आता है॥

गज़ल नं० ११

इधर नाजिल बलाये नागहानी देखते जावो।
उधर उनके दमन की नौजवानी देखते जावो॥
लगाते हो जिगर पर तीर पर हम उफ नहीं करते।
जबाँ रखते हैं गोया बे जबानी देखते जावो॥
ये छीटें खून की उस दामने कातिल में कहती है।
शहीदाने वतन की ये निशानी देखते जावो॥

अभी लाखों ही बैठे हैं बुझाने को प्यास अपनी।
खतम हो जाय ना ख़ंजर का पानी देखते जावो॥
इधर है सर झुका अपना है उनका हाथ कब्जे पर।
सरे बाजार होती है कुरबानी देखते जावो॥
अरे साहब जिभा करने में क्यों मुह फेर लेते हो।
मेरी गरदन पे ख़ंजर की रवानी देखते जावो॥
करेगा कब तलक खूने नाहक मजलूमों को ज़ालिम।
रहेगी कब तलक ये हुक्मरानी देखते जावो॥
हमारी आह से आतिश फड़क उठेगी दुनियां में।
अजब गर्दिश हैं रंगत आसमानी देखते जावो॥
है नथाराम गुले गुलजार तुरबत हो गई अपनी।
खुदा के बाद मुरदन मेहरबानी देखते जावो॥

गज़ल नं० १२

शहन्शाहों की अब यह हुक्म रानी देखते जाओ।
हमारे मुल्क की यह नागहानी देखते जाओ॥
उठाया कत्ल का बीड़ा है उस कातिल ने मक्तल में।
बहेगा खून ये बन कर के पानी देखते जाओ॥
जिगर पर जख़्म खाकर के शहीदाने वतन बोले।
है अब आखीर मेरी ज़िन्दगानी देखते जाओ॥
कहा ये हथकड़ी औ बेड़ियों ने आह भर कर के।
गुजरती जेल के अन्दर जवानी देखते जाओ॥
सुन जाते थे ना मुझसे तरे दिन रात के सिकवे।
तुम अपना जोर मेरी बे ज़बानी देखते जाओ॥
कहैं नत्था सुनो साहब जो है मशहूर हरजाँ पर।
लिखी हैगी ये हमने शेर ख्वानी देखते जाओ॥

—:❀:❀:❀:—

गज़ल नं० १२

समझलो ओ माई लार्ड इर्विन, नहीं तो बरपा फितूर होगा।
महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तों, पै ख्याल लाना ज़रूर होगा॥
समस्त कैदी जो राजनैतिक, दो छोड़ उनको जनाब इर्विन।
दमन, सितम, जुल्म से नहोंगे, कभी आप कामयाब इर्विन॥
स्वराज्य की दीजिये गारंटी, यही है मौका नायाब इर्विन।
नहीं तो हिंदोस्ताँ में होगा, बहुत बड़ा इन्किलाब इर्विन॥
शहीद होकर वतन परस्तों का, फर्ज अव्वल हुजूर होगा।
महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तों, पै ख्याल लाना ज़रूर होगा॥
शराब गाँजा अफीम ताड़ी, का बन्द करदो बाजार इर्विन।
नशीली चीज़ों का हिन्द में अब न होने पावे प्रचार इर्विन॥
नमक टेक्स काबिले रहम है गुनाह बे लुत्फ़ यार इर्विन।
फिजूल डंडे व गोलियों से बनाना हमको शिकार इर्विन॥
गुलाम हिन्दोस्ता रहे अब, वो देखना ख्वाब दूर होगा।
महात्मा गान्धी की ग्यारह शर्तों, पै ख्याल लाना जरूर होगा॥
तड़फ रहे हैं किसान भूखों, हैं उनपे संकट महान इर्विन।
बहुत जल्द होना चाहिये अब, वो टैक्स आधा लगान इर्विन॥
बड़ी है तनख्वाह अफ़सरों की, करो वो कम लाओ ध्यान इर्विन।
करो गरीबों की परवरिश अब, बचालो लन्दन की शान इर्विन।
शेर—विदेशों से जो अपना व्यापार होगा।
हमारा ही कुल उसपै अधिकार होगा॥
एसेम्बली म्युनिसिपल्टी के मेम्बर।
नहीं नाम जद कोई गमख्वार होगा॥
अगर हो चैनो अमन के ख्वाहा, नहीं गर्ब चूर २ होगा॥ ३॥
महात्मा गान्धी की ग्यारह शर्तों, पै ख्याल लाना जरूर होगा॥

जो कालिजों में हैं इल्म पढ़ते, उन्हें है सैनिक बनाना इर्विन ।
वो आत्म रक्षा के चेम्प पेइर गन, हमें चाहिये बँधाना इर्विन ॥
जिलावतन हैं जो मुल्की लीडर, उन्हें है लाजिम बुलाना इर्विन ।
वो काला कानून रेगुलेशन, प्रेस ऐक्ट को उठाना इर्विन ॥
नहीं गोलमेज साइमन से, शिफा हिंद का नसूर होगा ।
महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तों, पै ख्याल लाना ज़रूर होगा ॥

गज़ल नं० १३

सुनो भारत वीरो धर ध्यान, मिटा दो अन्यायी की शान ।
सत्याग्रह संग्राम मचाओ, देश धर्म पर शीश कटाओ ॥
भारत को आजाद बनाओ, हिंसा भाव न मन में लाओ ।
शांति की लेकर नग्न कृपान ॥ मिटा० ॥
ये ही वीरों का है बाना, हँसतेही हँसते मिट जाना ।
पीछे पैर न कभी हटाना, प्रण हो ऐसा दिल में ठाना ॥
यही है मोहन का फर्मान ॥मिटा०॥
हैं होते जो २ अत्याचार, किया है उन पर कभी विचार ।
धरसना शोलापुर की मार, हो गये हैं ज़ालिम ये ज़ार ॥
युवतियों का करते अपमान ॥मिटा०॥
करेंगे तन मन सभी निसार, दासता दुर्ग करैंगे छार ।
रहेंगे होकर सभी समान ॥मिटा०॥
(साम्य तत्व का सिंहनाद)

गज़ल नं० १४

नौजवानों और किसानों का कतव्य ।

उबल उठा है रुधिर यकायक बालक बृद्ध जवानों का ।
सकल हिंद ने किया समर्थन, पतन करो फरमानों का ॥
टेक० रोको स्वयं स्वयम्सेवक बन, मारग ताड़ी खानों का ।
करो न अब स्पर्श उठादो चलन विदेशी बानों का ॥

लगें सभायें गांव २ में, हो संगठन किसानों का।
डरो न करो ज़िमीदारों को देना बन्द लगानों का॥
साहस कर के सहो दमन दुख, बन के लक्ष निशानों का।
कट कर डटो हंस हंस के तजो प्रेम सन्तानों का॥
करो अहिंसा का प्रण पालन धर्म ऋषी सन्तानों का।
हल चल मचे देख रिपु दल में, साहस शूर सुजानों का॥
अबला सबल बनी रण चन्डी, करें भ्रमण मैदानों का।
लेकर ध्वजा निरंकुश निर्भय, धरना धरें दुकानों का॥
साहस करो "बिमल" अब अपने दे २ कर बल प्राणों का।
तो स्वराज्य कल तुझे मिलेगा, तुरत फुरत बलिदानों का॥

"बिमल"

गज़ल नं० १५

भारत के शेर जागो, बदला है अब जमाना।
वालन्टियर बनो तुम, अब छोड़ दो बहाना॥
अब बुज़दिली न हरगिज़, तुम पास दो फटकने।
आखिर तो दम अदम को, होगा कभी रवाना॥
देवी स्वतंत्रता के, वीरो बनो उपासक।
अब पूर्वजों के अपने, गर नाम है चलाना॥
परदेसियों के इस दम, कपड़े जो हैं पहिनते।
उनको हराम है अब, भारत का अन्न खाना॥
माता की कोख नाहक, करते हो तुम कलंकित।
प्यारे वतन को अब तो, आज़ाद है बनाना॥
दिल में झिझक न लावो, आगे कदम बढ़ावो॥
है स्वर्ग के बराबर, इस वक्त जेलखाना।
"सरयू" समय यही है, कुछ करलो देश सेवा।
दो दिन की जिन्दगी है, इसका नहीं ठिकाना॥

भजन १६

भारत भर में गूंजे नाद । इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद ॥
नौजवानों हो होशियार । इ० जि० ॥
बच्चा बच्चा दे ललकार । इ० जि० ॥
गांवों गांवों मचे पुकार । इ० जि० ॥
चलो दोस्तो कारागार । इ० जि० ॥
गले में हो फांसी का हार । इ० जि० ॥
बोले बेड़ी की झनकार । इ० जि० ॥
बेड़ी से निकले झनकार । इ० जि० ॥

लीजिये शुभ अवसर लीजिये

क्या

प्रमेह चूर्ण तय्यार हो गया। कैसाही प्रमेह क्यों न हो पूरी खुराक खाने से जड़ से नष्ट हो जाता है कीमत सोला खुराक १) रु०

गरमी व आतशक

कैसी ही पुरानी आतशक हो तेल, खटाई, मिर्च, आदि का परहेज नहीं करना होगा। १६ सोला गोली १) रु०

एक बार अवश्य परीक्षा करिये।

पताः—

पं० विष्णुदत्त निघंट विशारद राजवैद्य,

न्यू रोड, बादशाही नाका, कानपुर।

V. P. Press, Cawnpore.

सत्याग्रही सैनिक बहनें

राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरूजी की

बहन, कृष्णा नेहरू

धर्मपत्नी, कमला नेहरू

राष्ट्रीय पुस्तक-भण्डार, अनवरगंज, कानपुर ।